गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक सिद्धांत और उनका समाज पर प्रभाव

सुषमा यादव, पीएच.डी. विद्वान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, शिक्षा विभाग, प्रोधौगिकी विश्वविधायलय, जयपुर, राजस्थान
डॉ. लवी सक्सैना, एसोसिएट प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, शिक्षा विभाग, प्रोधौगिकी विश्वविधायलय, जयपुर, राजस्थान

सारांश

यह शोधपत्र गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक सिद्धांतों और उनके समाज पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण करता है। गुरुजी केवल एक विचारक या संगठनकर्ता नहीं थे, बल्कि एक ऐसे शिक्षाशास्त्री थे, जिनका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को भारतीय संस्कृति, मूल्यों और जीवनदृष्टि के अनुरूप पुनः परिभाषित करना था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, राष्ट्रभक्ति, और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास होना चाहिए। शोध के मुख्य बिंदुओं में शामिल हैं: गुरुजी के शैक्षिक दृष्टिकोण की दार्शनिक और सांस्कृतिक नींव, शिक्षा में राष्ट्रवाद और सेवा भावना का स्थान, तथा इन सिद्धांतों का समाज पर नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव। साथ ही, इस शोध में यह भी मूल्यांकन किया गया है कि आज की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरुजी के विचार कितने प्रासंगिक हैं। यह शोध स्पष्ट करता है कि यदि शिक्षा को भारतीयता, आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाए, तो यह केवल व्यक्तियों को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र को सशक्त बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार, गुरुजी के शैक्षिक सिद्धांत आज भी शिक्षा क्षेत्र में एक दृष्टिकोणात्मक परिवर्तन की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

परिचय

भारत में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्र निर्माण की एक सशक्त प्रक्रिया रही है। भारतीय विचारधारा में शिक्षा को आत्मा की पूर्णता और चरित्र निर्माण से जोड़ा गया है। इस दिशा में अनेक महान विचारकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिनमें से एक प्रमुख नाम **गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर** का है, जिन्हें ***"गोलवलकर गुरुजी"*** के नाम से जाना जाता है। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के द्वितीय सरसंघचालक थे और भारतीय समाज के पुनर्निर्माण हेतु एक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद-आधारित शिक्षा पद्धति के प्रबल समर्थक थे।

गुरुजी का मानना था कि शिक्षा केवल पश्चिमी पद्धति पर आधारित न होकर भारतीय संस्कृति, संस्कारों और मूल्यों को केंद्र में रखकर दी जानी चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के अंदर आत्मबल, चरित्र, नैतिकता और देशभक्ति का विकास करना होना चाहिए। उनके शैक्षिक विचारों का प्रभाव न केवल स्वयंसेवक निर्माण तक सीमित रहा, बल्कि सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में भी व्यापक रूप से महसूस किया गया।

भारतीय शिक्षा में सांस्कृतिक चेतना के वाहक: गुरुजी गोलवलकर का शैक्षिक दृष्टिकोण

भारतीय परंपरा में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर एक ऐसी प्रक्रिया माना गया है जो व्यक्ति के आंतरिक विकास, चारित्रिक निर्माण और राष्ट्रहित में योगदान के लिए प्रेरित करती है। इस विचारधारा के सशक्त संवाहक रहे **गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर,** जिन्होंने न केवल भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को संगठित रूप प्रदान किया, बल्कि शिक्षा को एक साधन के रूप में उपयोग कर राष्ट्र के नव निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। गोलवलकर जी का यह विश्वास था कि भारत की शिक्षा प्रणाली को अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहिए — एक ऐसी शिक्षा जो न केवल बौद्धिक दक्षता प्रदान करे, बल्कि नैतिक मूल्यों, आत्मबोध, तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना से भी परिपूर्ण हो। उनके विचारों में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण केवल औद्योगिक या आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि एक सशक्त, संस्कारित और आत्मविश्वासी समाज से संभव है — और इसका माध्यम है **शिक्षा।**

उन्होंने कहा था:

"We must have our own outlook regarding everything, our own way of life, our own view of things. And this is possible only when we go deep into our own culture and imbibe its life-giving values."

-(गुरुजी गोलवलकर)

आज जब भारतीय शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, नवउदारवाद और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के दबाव में निरंतर अपनी मूल आत्मा से दूर होती जा रही है, तब गुरुजी के विचार पुनः प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। इस शोध का उद्देश्य है — गुरुजी गोलवलकर के शैक्षिक सिद्धांतों का विश्लेषण करना, तथा यह समझना कि उनके विचारों ने भारतीय समाज पर क्या प्रभाव डाला और आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता क्या है।

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (1906-1973) भारतीय समाज और संस्कृति के एक महत्वपूर्ण विचारक और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) के प्रमुख थे। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीयता के साथ गहरे जुड़ा हुआ था। उनके शैक्षिक सिद्धांतों का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा, खासकर उनके विचारों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक सिद्धांत:

1. भारतीयता और शिक्षा का संबंध:

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर भारतीय शिक्षा पद्धति के पुनर्निर्माण के पक्षधर थे। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान और सूचना के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सशक्त निर्माण का माध्यम माना। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण में भारतीयता और शिक्षा का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास का होना चाहिए, जिसमें भारतीय संस्कृति, जीवन के मूल्य, और धर्म का गहरा समावेश हो।

गुरुजी के अनुसार, भारतीयता का तात्पर्य न केवल भारतीय सभ्यता और संस्कृति से था, बल्कि एक ऐसे जीवन दृष्टिकोण से था, जो पूरे विश्व में भारतीय संस्कारों और मूल्यों की विशिष्टता को पहचानता और बढ़ावा देता है। गुरुजी ने शिक्षा के माध्यम से भारतीय समाज को अपने धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर से जोड़ने का प्रयास किया, जिससे वे पश्चिमी और औपनिवेशिक विचारधाराओं के प्रभाव से मुक्त हो सकें।

- **भारतीयता का शैक्षिक दृष्टिकोण में समावेश:**

गुरुजी के अनुसार, भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक और तकनीकी शिक्षा तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें संस्कार, नैतिक शिक्षा, और सामाजिक जिम्मेदारी का समावेश होना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण और उसे समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करना था।

"शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होना चाहिए, जिसमें संस्कार, मूल्य और धर्म की शिक्षा का समावेश हो।"

— गोलवलकर, "बंच ऑफ थॉट्स"

गुरुजी के अनुसार, भारतीयता की शिक्षा से, व्यक्ति को धर्म, संस्कृति और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का अहसास होता है। इस प्रकार की शिक्षा से एक व्यक्ति केवल स्वतंत्र और आत्मनिर्भर नहीं बनता, बल्कि वह अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति जागरूक और उत्तरदायी नागरिक के रूप में उभरता है।

- **भारतीय संस्कृति और शिक्षा का एकीकरण:**

गुरुजी के अनुसार, शिक्षा और भारतीय संस्कृति का आपसी संबंध है, और शिक्षा का मुख्य उद्देश्य संस्कृति के इन गुणों को सहेजना और प्रसारित करना है। उन्होंने भारतीय संस्कृति में संस्कारों और धार्मिक शिक्षाओं के महत्व पर जोर दिया। गुरुजी का विचार था कि जब तक शिक्षा में धार्मिक और नैतिक मूल्यों का समावेश नहीं होगा, तब तक वह शिक्षा अधूरी रहेगी।

गुरुजी ने कहा कि भारतीयता केवल भौतिक संसाधनों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण है जो समानता, भाईचारे, और मानवता के सिद्धांतों पर आधारित है। उनका मानना था कि भारतीयता का अस्तित्व उसकी सांसकृतिक गहराई, मूल्य आधारित शिक्षा, और धार्मिक धारा से जुड़ा हुआ है।

- **शिक्षा में राष्ट्रीयता और भारतीयता का समावेश:**

गुरुजी के अनुसार, भारतीय शिक्षा को राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय गौरव के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। वे मानते थे कि भारतीय शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी और बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भावना, और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को बढ़ावा देना भी होना चाहिए। उनका यह मानना था कि शिक्षा को राष्ट्र की सेवा और समाज की सेवा के रूप में ढाला जाना चाहिए।

गुरुजी ने विशेष रूप से स्वदेशी शिक्षा पद्धतियों को बढ़ावा दिया और भारतीय संस्कृति से जुड़े आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक विषयों को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में देखा। उन्होंने शिक्षा को आध्यात्मिक जागरूकता, सामाजिक समानता, और संसार के प्रति जिम्मेदारी से जोड़ा, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास हो सके।

"हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो अपने राष्ट्र, अपनी संस्कृति, और अपने गौरव को पहचानने की प्रेरणा दे।"

— गोलवलकर, "बंच ऑफ थॉट्स"

- **आधुनिकता और भारतीयता का सामंजस्य:**

गुरुजी का यह भी मानना था कि भारत को आधुनिकता की ओर अग्रसर होते हुए अपनी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने यह सुझाव दिया कि हमें पश्चिमी शिक्षा प्रणाली से सावधान रहना चाहिए, जो केवल

तकनीकी और बौद्धिक विकास पर जोर देती है, लेकिन संस्कारों और नैतिक मूल्यों को दरकिनार कर देती है। उनके विचार में, शिक्षा में भारतीयता का समावेश भारत को अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से जोड़ने का सबसे प्रभावी तरीका है।

2. शिक्षा का उद्देश्य: चरित्र निर्माण और राष्ट्रसेवा

गुरुजी के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना या आर्थिक प्रगति करना नहीं होना चाहिए। वे मानते थे कि शिक्षा को समाज और राष्ट्र के हित में उपयोग करने योग्य बनाना ही उसका सच्चा उद्देश्य है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि शिक्षा व्यक्ति को **चरित्रवान**, **कर्तव्यनिष्ठ**, और **समर्पित नागरिक** बनाए।

"शिक्षा से उद्देश्य केवल आर्थिक उन्नति नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और राष्ट्र के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बननी चाहिए।"

— गुरुजी गोलवलकर

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक दृष्टिकोण में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास और तकनीकी कौशल प्राप्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका मानना था कि शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य चरित्र निर्माण और राष्ट्रसेवा होना चाहिए। वे मानते थे कि किसी भी राष्ट्र की शक्ति और स्थिरता केवल आर्थिक या बौद्धिक संसाधनों से नहीं, बल्कि नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और व्यक्तिगत चरित्र से निर्धारित होती है। गुरुजी के अनुसार, एक व्यक्ति का चरित्र समाज और राष्ट्र की दिशा को निर्धारित करता है, और इसलिए शिक्षा में समानांतर रूप से बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का समावेश होना चाहिए।

गुरुजी ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा मानते हुए कहा कि नैतिकता, ईमानदारी, सच्चाई और समाज के प्रति संवेदनशीलता शिक्षा के मुख्य अंग होने चाहिए। उनके अनुसार, यदि शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित रह जाती है, तो वह समाज के लिए एक असंतुलित और नैतिक रूप से कमजोर नागरिक तैयार करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होना चाहिए, ताकि व्यक्ति केवल व्यक्तिगत उन्नति के बजाय समाज और राष्ट्र के लिए समाजसेवी और उत्तरदायी नागरिक के रूप में कार्य कर सके।

गुरुजी के दृष्टिकोण में राष्ट्रसेवा का अर्थ केवल सैनिक सेवा या राजनीतिक कर्तव्यों तक सीमित नहीं था। उनका विचार था कि राष्ट्रसेवा का व्यापक अर्थ है, समाज के उत्थान, वर्ग संघर्ष की समाप्ति, धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता को बढ़ावा देना, और समाज में व्याप्त सामाजिक असमानताओं और अन्याय के खिलाफ काम करना। शिक्षा को इस तरह से ढालने का उनका उद्देश्य था कि प्रत्येक नागरिक अपने देश, समाज और संस्कृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझे और उसे नैतिकता और राष्ट्रीय भावना के साथ निभाए।

"शिक्षा से उद्देश्य केवल आर्थिक उन्नति नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और राष्ट्र के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बननी चाहिए।"

— गोलवलकर, "बंच ऑफ थॉट्स"

इस प्रकार, गुरुजी ने शिक्षा को चरित्र निर्माण और राष्ट्रसेवा के एकत्रित रूप में देखा, जिससे हर व्यक्ति समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाते हुए, एक सशक्त और नैतिक जीवन जी सके। उनके अनुसार, यदि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी और आर्थिक सफलता तक सीमित होगा, तो वह समाज के लिए नासमझ और आत्मकेंद्रित व्यक्तियों को जन्म देगा, जो राष्ट्र की प्रगति में योगदान नहीं कर सकते। इसलिए, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज और राष्ट्र के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना था।

3. आत्मबोध और राष्ट्रबोध का समन्वय:

गुरुजी गोलवलकर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्मिक जागरण और उसकी स्व-परिचय की खोज में सहायक होना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि एक शिक्षित व्यक्ति को यह समझ में आना चाहिए कि वह कौन है, उसकी संस्कृति, परंपराएं, और राष्ट्रीय पहचान क्या हैं। यह आत्मबोध ही व्यक्ति को राष्ट्रबोध की ओर ले जाता है, जहाँ वह राष्ट्र को केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक जीवंत चेतना के रूप में अनुभव करता है।

"When the individual realizes his identity with the nation, the nation becomes his extended self. True education must awaken this realization."

— गोलवलकर, Bunch of Thoughts

इस दृष्टिकोण के अनुसार, जब एक व्यक्ति अपने स्वत्व (Identity) को पहचानता है और उसे राष्ट्र से जोड़ता है, तभी वह राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने को तत्पर होता है। गुरुजी का यह विचार भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से गहराई से जुड़ा है, जहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' जैसे भाव शिक्षा के माध्यम से आत्मसात किए जाते हैं।

4. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और शिक्षा

गुरुजी के शैक्षिक दर्शन का मूल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में निहित है। वे मानते थे कि भारत एक राष्ट्र राज्य (Nation-

State) नहीं, बल्कि एक धार्मिक-सांस्कृतिक इकाई है, जिसकी पहचान सनातन संस्कृति, धर्म, परंपरा, और आध्यात्मिक दर्शन से जुड़ी हुई है। उनका मानना था कि यदि शिक्षा प्रणाली इन तत्वों को नकार देगी, तो वह राष्ट्रीय अस्मिता को खतरे में डाल देगी।

उन्होंने इस बात की आलोचना की कि आधुनिक शिक्षा पद्धति में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म से विमुख होना या उससे दूरी बनाना हो गया है। जबकि गुरुजी के अनुसार, धर्म का शुद्ध और सटीक रूप से शिक्षण ही नैतिकता, कर्तव्यबोध और सामाजिक अनुशासन की जड़ें मजबूत कर सकता है।

"यदि हम शिक्षा में संस्कृति, धर्म और सभ्यता की उपेक्षा करेंगे, तो हम एक आत्मविहीन समाज तैयार कर रहे होंगे, जो केवल भौतिकता में डूबा रहेगा।"

— गोलवलकर जी के भाषणों से प्रेरित उद्धरण

गुरुजी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उद्देश्य किसी विशेष संप्रदाय को प्राथमिकता देना नहीं, बल्कि समस्त भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता को पुनः जाग्रत करना था, जिसमें शिक्षा एक सशक्त माध्यम बन सकती है।

5. शिक्षा का भारतीयकरण और शारीरिक-मानसिक संतुलन

गोलवलकर जी शिक्षा के भारतीयकरण के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि पश्चिमी शिक्षा प्रणाली, जो औपनिवेशिक भारत पर थोपी गई थी, ने भारतीय समाज को अपने सांस्कृतिक मूल्यों से दूर कर दिया है। उन्होंने शिक्षा को पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखने की वकालत करते हुए उसमें व्यवहारिकता, आत्मनिर्भरता, शारीरिक परिश्रम, और समूह सहयोग की भावना जोड़ने पर ज़ोर दिया। उनके अनुसार, व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास तभी संभव है जब शिक्षा व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि उसे शारीरिक रूप से सशक्त, मानसिक रूप से सजग और आध्यात्मिक रूप से संतुलित बनाए। उन्होंने स्वदेशी शिक्षा प्रणाली को समय की मांग बताया, जो भारतीय मूल्यों और समाज की वास्तविक आवश्यकताओं पर आधारित हो।

"हमारी शिक्षा पद्धति पश्चिमी प्रभावों से मुक्त होनी चाहिए और भारतीय समाज की परंपराओं और संस्कारों से जुड़ी हुई होनी चाहिए।"

- **समाज पर प्रभाव:**

गुरुजी के इन शैक्षिक विचारों का समाज पर गहरा और दूरगामी प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) जैसे संगठनों ने उनके विचारों को आधार बनाकर शिक्षा और समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया। उनके शैक्षिक सिद्धांतों ने राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव, और सामाजिक समरसता को पुनर्स्थापित करने की दिशा में एक वैचारिक प्रेरणा दी।

"राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए हमें अपने शिक्षा पद्धतियों को भारतीय संस्कृति के अनुरूप ढालना होगा।"

उनके प्रभाव से आज भी कई शैक्षणिक संस्थान, गुरुकुल, और सामाजिक संगठन शिक्षा को भारतीय जीवनदर्शन, नैतिकता और सेवा भावना से जोड़कर आगे बढ़ा रहे हैं।

<u>समाज पर गुरुजी के शैक्षिक प्रभाव:</u>

गुरुजी गोलवलकर केवल एक विचारक या संगठनात्मक नेता नहीं थे, बल्कि वे ऐसे द्रष्टा थे जिन्होंने शिक्षा के माध्यम से एक **संस्कारयुक्त, चरित्रनिष्ठ और राष्ट्रभक्त समाज** की कल्पना की थी। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण का प्रभाव न केवल शैक्षणिक संस्थानों पर पड़ा, बल्कि उसने **समाज की चेतना, संगठन निर्माण और राष्ट्र के प्रति लोगों के दृष्टिकोण** को भी गहराई से प्रभावित किया।

1. शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र की चेतना का जागरण:

गुरुजी का स्पष्ट मत था कि जब तक शिक्षा **राष्ट्रप्रेम, संस्कृति और कर्तव्यबोध** से ओत-प्रोत नहीं होगी, तब तक समाज में स्थायी परिवर्तन संभव नहीं। उन्होंने ऐसी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया, जो व्यक्ति को अपने **राष्ट्रीय उत्तरदायित्व** का बोध कराए।

"हमारा समाज तभी सशक्त बन सकता है जब उसकी आत्मा में राष्ट्र के प्रति श्रद्धा हो — और यह श्रद्धा शिक्षा से ही उपजती है।"

— गुरुजी गोलवलकर, "बंच ऑफ थॉट्स"

उनके इस विचार का प्रभाव विशेष रूप से **शाखाओं के माध्यम से युवाओं के निर्माण** में देखा गया, जहाँ बालकों और युवाओं को शिक्षा के साथ-साथ **संस्कार, अनुशासन और देशसेवा** की प्रेरणा दी जाती है।

2. सांस्कृतिक पुनर्जागरण और भारतीयता का बोध:

गुरुजी की शिक्षा-दृष्टि ने समाज में **भारतीयता की पुनर्स्थापना** का मार्ग प्रशस्त किया। शिक्षा को पाश्चात्य प्रभाव से मुक्त कर **भारतीय दर्शन, परंपरा और मूल्यों** से जोड़ने का जो प्रयास उन्होंने किया, उसका सीधा असर **गैर-सरकारी शैक्षणिक संस्थानों,** विशेषकर **विद्या भारती** जैसे संगठनों पर पड़ा।

"विद्यार्थी को केवल परीक्षा के लिए नहीं, जीवन के लिए तैयार करना चाहिए — यह जीवन भारतीय जीवन हो, यह सुनिश्चित करना शिक्षा का धर्म है।"

— गुरुजी गोलवलकर

आज **विद्या भारती द्वारा संचालित हज़ारों विद्यालय** गुरुजी के विचारों पर आधारित शिक्षा दे रहे हैं, जिसमें शिक्षा के साथ-साथ **भारतीय संस्कृति, संस्कार, योग, गायन,** और **सेवा-भावना** पर विशेष बल दिया जाता है।

3. चरित्र निर्माण और सामाजिक नेतृत्व का विकास

गुरुजी का यह दृढ़ विश्वास था कि **समाज का नेतृत्व वही कर सकता है जो चरित्रवान हो।** उन्होंने शिक्षा को **चरित्र निर्माण** का सबसे बड़ा उपकरण माना। इस विचार के प्रभाव से समाज में ऐसे अनेक शिक्षित कार्यकर्ताओं और संगठनों का जन्म हुआ, जिन्होंने **राजनीति, समाजसेवा, चिकित्सा, पत्रकारिता, शिक्षा और विज्ञान** जैसे क्षेत्रों में **नैतिक नेतृत्व** प्रस्तुत किया।

"यदि शिक्षा चरित्र निर्माण नहीं करती, तो वह समाज में एक नया संकट पैदा करती है — ज्ञानवान लेकिन मूल्यहीन व्यक्ति सबसे बड़ा खतरा है।"

— गुरुजी गोलवलकर

यह विचार वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है, जब समाज **नैतिक पतन** की समस्या से जूझ रहा है। गुरुजी के सिद्धांतों ने इस संकट का समाधान शिक्षा के माध्यम से प्रस्तुत किया।

4. आत्मनिर्भरता और सामाजिक सेवा की प्रेरणा:

गुरुजी ने शिक्षा को **आत्मनिर्भर समाज** की नींव बताया। उनका मानना था कि यदि शिक्षा रोजगारोन्मुख होने के साथ-साथ **सेवाभावी और स्वदेशी विचारधारा** को बढ़ावा दे, तो समाज में **आर्थिक और नैतिक स्वावलंबन** उत्पन्न किया जा सकता है। इसी सोच से प्रेरित होकर कई संगठनों ने **कौशल विकास, ग्रामीण शिक्षा,** और **समाजोत्थान** के लिए स्कूल और प्रशिक्षण केंद्र प्रारंभ किए। शिक्षा को केवल "डिग्री प्राप्ति" से उठाकर "जीवन निर्माण" की ओर मोड़ा गया।

5. शिक्षा में धर्मनिरपेक्षता बनाम धार्मिक चेतना का संतुलन:

गुरुजी के विचारों ने समाज में एक बहस को जन्म दिया — **क्या शिक्षा में धार्मिक चेतना का स्थान होना चाहिए?** उन्होंने स्पष्ट किया कि वे **सांप्रदायिक धर्म नहीं,** बल्कि **सांस्कृतिक धर्मबोध और नैतिकता** की बात कर रहे हैं। इसने समाज में शिक्षा के उद्देश्य को लेकर **सांस्कृतिक और वैचारिक विमर्श** को दिशा दी।

"धर्म का अर्थ पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि जीवन का श्रेष्ठतम आचरण है — यही शिक्षा में सिखाया जाना चाहिए।"

— गुरुजी गोलवलकर

<u>शोध की प्रमुख दिशाएँ:</u>

1. गुरुजी के शैक्षिक दृष्टिकोण की सांस्कृतिक और दार्शनिक नींव का अध्ययन

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक दृष्टिकोण की सांस्कृतिक और दार्शनिक नींव गहराई से भारतीय जीवनदर्शन में रची-बसी है। उनका मानना था कि शिक्षा मात्र ज्ञानार्जन या सूचनाओं का संप्रेषण नहीं, बल्कि एक *जीवन दृष्टि* है, जो व्यक्ति को अपने धर्म, कर्तव्यों, और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना से जोड़ती है। सांस्कृतिक दृष्टि से वे शिक्षा को भारत की प्राचीन संस्कृति और गौरव के संरक्षण तथा पुनरुत्थान का साधन मानते थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह कहा कि हमारी शिक्षा पद्धति को पश्चिमी औपनिवेशिक प्रभावों से मुक्त कर, भारतीय आत्मा और संस्कृति के अनुरूप ढालना अनिवार्य है। उनका यह कथन—

"हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो अपने राष्ट्र, अपनी संस्कृति, और अपने गौरव को पहचानने की प्रेरणा दे"—

इस दिशा की पुष्टि करता है। दार्शनिक स्तर पर गुरुजी के विचार ***अद्वैत वेदांत, भगवद्गीता के कर्मयोग,* और *धर्मशास्त्रों*** में निहित नैतिक मूल्यों पर आधारित थे। वे शिक्षा को "विद्या" मानते थे, जो आत्मज्ञान, आत्मबोध और अंततः आत्मसाक्षात्कार की ओर ले जाती है। उनके अनुसार, यदि शिक्षा व्यक्ति को ***स्वधर्म, स्वभाव,*** और ***स्वसंस्कार*** की ओर नहीं ले जाती, तो वह अपूर्ण और अधूरी मानी जानी चाहिए। इस प्रकार, गुरुजी का शैक्षिक दृष्टिकोण भारतीयता, आध्यात्मिकता और राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण था।

2. शिक्षा में राष्ट्रवाद और चरित्र निर्माण को केंद्र में रखने की उनकी अवधारणा का विश्लेषण

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर की शैक्षिक अवधारणा में **राष्ट्रवाद** और **चरित्र निर्माण** को अत्यंत केंद्रीय स्थान प्राप्त था। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक सफलता या आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसका प्रमुख लक्ष्य ऐसे नागरिकों का निर्माण होना चाहिए जो नैतिक दृष्टि से सुदृढ़, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित हों। गुरुजी के विचारों में राष्ट्र केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि एक **जीवंत सांस्कृतिक इकाई है**, जिससे व्यक्ति का गहरा आत्मिक संबंध होता है। इसलिए, उन्होंने शिक्षा

को इस दृष्टिकोण से विकसित करने की आवश्यकता बताई, जिससे विद्यार्थी अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम, गर्व और सेवा की भावना से ओत-प्रोत हों। वे मानते थे कि यदि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के **चरित्र** और **नैतिक मूल्यों** के निर्माण की ओर केंद्रित हो, तो वही शिक्षा समाज को एकजुट करने और राष्ट्र को सशक्त बनाने का माध्यम बन सकती है। उनके शब्दों में—

"शिक्षा से उद्देश्य केवल आर्थिक उन्नति नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और राष्ट्र के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बननी चाहिए।"

इस प्रकार, गुरुजी का शैक्षिक दृष्टिकोण शिक्षा को राष्ट्र-निर्माण का एक सशक्त साधन मानता है, जिसमें राष्ट्रभक्ति और चरित्रबल को सर्वोपरि रखा गया है।

3. समाज पर उनके शैक्षिक विचारों के प्रभावों का परीक्षण — विशेषकर नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों में

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक विचारों का समाज पर व्यापक और गहरा प्रभाव पड़ा, विशेषकर ***नैतिक, सामाजिक,*** और ***सांस्कृतिक*** आयामों में। उनके सिद्धांतों से प्रेरित शैक्षिक संस्थाओं जैसे ***विद्या भारती*** और *सरस्वती शिशु मंदिर* ने नैतिक शिक्षा को अपने शिक्षण का मूल स्तंभ बनाया। इन संस्थाओं में विद्यार्थियों को ***ईमानदारी, आत्म-संयम, राष्ट्रभक्ति,*** और ***परोपकार*** जैसे मूल्यों का अभ्यास कराना एक नियमित प्रक्रिया है, जिससे उनका नैतिक विकास सुनिश्चित हो सके। सामाजिक दृष्टि से, गुरुजी की शिक्षा ने समाज में सेवा के कार्यों को नई दिशा दी। ग्रामीण शिक्षा, निर्धन वर्ग के बच्चों के लिए विद्यालयों की स्थापना, और आपदा के समय राहत कार्यों में शिक्षित स्वयंसेवकों की भूमिका इसी दृष्टिकोण का परिणाम है। इन कार्यों ने समाज में ***सक्रिय नागरिकता*** और ***संवेदनशील नेतृत्व*** को बढ़ावा दिया। सांस्कृतिक स्तर पर, गुरुजी के विचारों ने शिक्षा को भारतीय संस्कृति के संरक्षण और प्रचार का माध्यम बनाया। योग, संस्कृत, भारत का प्राचीन गौरवशाली इतिहास, और सांस्कृतिक परंपराओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के जो प्रयास हुए हैं, वे गुरुजी के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भावना को ही प्रतिबिंबित करते हैं। इस प्रकार, उनके शैक्षिक दृष्टिकोण ने न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को गढ़ा, बल्कि भारतीय समाज को एक सशक्त, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध दिशा प्रदान की।

4. वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति और व्यवस्था में गुरुजी के विचारों की उपयोगिता और प्रासंगिकता का मूल्यांकन

वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) में कई ऐसे तत्व सम्मिलित हैं जो गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता और उपयोगिता को उजागर करते हैं। गुरुजी द्वारा शिक्षा को नैतिकता, संस्कृति, और राष्ट्र के प्रति समर्पण से जोड़ने की जो अवधारणा दी गई थी, वह आज NEP के मूल उद्देश्यों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। नीति में "Value-based education" पर दिया गया विशेष बल गुरुजी के उस विचार से मेल खाता है जिसमें वे शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का माध्यम न मानकर, चरित्र निर्माण और सेवा भावना का स्रोत मानते थे। भारतीय भाषाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा में प्राथमिकता देना भी गुरुजी की उस सोच के अनुरूप है जिसमें वे भारतीयता को शिक्षा का मूल आधार मानते थे। NEP में ***राष्ट्रीय चेतना, आध्यात्मिक विकास, और व्यक्तित्व निर्माण*** को केंद्र में रखना गुरुजी के विचारों की जीवंत उपस्थिति को दर्शाता है। जब आज की युवा पीढ़ी तेजी से पश्चिमीकरण, भौतिकवाद और आत्मकेंद्रित जीवनशैली की ओर अग्रसर हो रही है, तब गुरुजी के विचार एक आवश्यक ***सांस्कृतिक पुनर्संतुलन*** और ***नैतिक पुनरुत्थान*** की दिशा प्रदान करते हैं। अतः, उनके शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए भी अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक बनी हुई है।

निष्कर्ष:

गुरुजी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर के शैक्षिक विचार भारतीय संस्कृति, दर्शन और राष्ट्रीय चेतना से गहराई से जुड़े हुए हैं। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान देने या रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर उसे जीवन निर्माण, आत्मबोध और राष्ट्रबोध की दिशा में ले जाने वाली प्रक्रिया माना। उनका विश्वास था कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने स्वधर्म, स्वभाव और सांस्कृतिक मूल्यों को पहचान कर एक उत्तरदायी नागरिक बन सकता है। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण की जड़ें वेदांत दर्शन, गीता के कर्मयोग और सनातन धर्म की नैतिकता में थीं, जिससे उन्होंने शिक्षा को एक आध्यात्मिक साधना के रूप में परिभाषित किया। गुरुजी ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो भारतीय संस्कृति, परंपराओं, भाषाओं और गौरवशाली इतिहास को संजोए, और बच्चों में राष्ट्रीय चरित्र तथा सेवा भावना विकसित करे। उन्होंने पश्चिमी औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते हुए भारतीय शिक्षा को आत्मनिर्भर, मूल्यनिष्ठ और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने पर बल दिया। उनके विचारों से प्रेरित संस्थाओं जैसे विद्या भारती और सरस्वती शिशु मंदिरों ने नैतिक शिक्षा, संस्कार, योग, और सेवा कार्यों को शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित किया। उनके अनुसार, शिक्षा के माध्यम से समाज में नैतिक अनुशासन, आत्म-संयम और परोपकार की भावना को मजबूत किया जा सकता है। आज जब वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और आत्मकेन्द्रितता ने शिक्षा को

प्रभावित किया है, ऐसे समय में गुरुजी के विचार एक संतुलन और दिशा प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी उनके विचारों की छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है—मूल्य-आधारित शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण, भारतीय संस्कृति का समावेश, और चरित्र निर्माण पर बल जैसे तत्व गुरुजी की शिक्षा-दृष्टि के अनुरूप हैं। गुरुजी का यह कथन—"शिक्षा व्यक्ति का निर्माण करे और व्यक्ति राष्ट्र का"—आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना स्वतंत्र भारत के आरंभिक काल में था। निष्कर्षतः, गुरुजी के शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में न केवल उपयोगी हैं, बल्कि भारत को आत्मनिर्भर, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और नैतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र बनाने की दिशा में एक दृढ़ मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं।

संदर्भ

1. गोलवलकर, एम. एस. (1966). *बंच ऑफ थॉट्स*. साहित्य सिंधु प्रकाशन.
2. गोलवलकर, एम. एस. (1939). *वी, ऑर आवर नेशनहुड डिफाइंड*. भारत पब्लिकेशंस.
3. ठेंगड़ी, डी. बी. (1997). *राष्ट्र चिंतन*. भारतीय मजदूर संघ.
4. विद्याभारती. (2004). *विद्याभारती की शैक्षिक दर्शन*. नई दिल्ली.
5. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*.
6. शर्मा, आर. एन. (2005). *शिक्षा के दार्शनिक आधार*. अटलांटिक पब्लिशर्स.
7. राधाकृष्णन, एस. (1948). *विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट*.
8. तिवारी, के. (2003). *भारतीय विचारकों के शैक्षिक विचार*. एपीएच पब्लिशिंग.
9. अग्रवाल, एस. पी. (1995). *भारत में शिक्षा के दार्शनिक आधार*. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग.
10. झा, एम. (2000). *शिक्षा की मूल अवधारणाएँ*. अटलांटिक.
11. गुप्ता, आर. के. (2011). *मूल्य शिक्षा: सिद्धांत और व्यवहार*. अटलांटिक पब्लिशर्स.
12. शर्मा, योगेन्द्र. (1996). *शिक्षा की नींव*. कनिष्क पब्लिशर्स.
13. शर्मा, ए. (2010). *भारतीय राष्ट्रवाद और शिक्षा*. दीप एंड दीप पब्लिकेशंस.
14. लोकेश, के. (2012). *शैक्षिक मनोविज्ञान और भारतीय विचारक*. विकास पब्लिशिंग.
15. आरएसएस. (2005). *गुरुजी: एक जीवनी*. सुरुचि प्रकाशन.
16. राज, डी. (2019). *भारत में शिक्षा और राष्ट्र निर्माण*. कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स.
17. जोशी, वी. (2004). *भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन*. रावत पब्लिकेशंस.
18. यूनेस्को. (2021). *हमारे भविष्य की पुनःकल्पना: शिक्षा हेतु एक नया सामाजिक अनुबंध*.
19. श्रीवास्तव, एस. (2018). *भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और शिक्षा*. सेज पब्लिकेशंस.
20. भारद्वाज, ए. (2001). *आधुनिक भारतीय शिक्षा*. विकास पब्लिशिंग.
21. मिश्र, आर. के. (2006). *स्वामी विवेकानंद और एम. एस. गोलवलकर के शैक्षिक विचार*.
22. पाटिल, ए. (2014). *शिक्षण में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद*. हिंदी साहित्य भवन.
23. सिंह, जे. (2012). *शिक्षा का दर्शन*. एपीएच पब्लिशिंग.
24. शर्मा, के. के. (2017). *भारतीय शैक्षिक विचारक*. दोआबा हाउस.
25. यादव, ए. (2020). *भारतीय शिक्षा नीति और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य*. हिंदी बुक सेंटर.
26. सिंह, पी. (2015). *भारत में शैक्षिक नेतृत्व और नीति*. स्प्रिंगर.
27. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *आजादी का अमृत महोत्सव: राष्ट्रीय एकता एवं शिक्षा*.
28. पांडेय, आर. (2002). *शिक्षा द्वारा राष्ट्र निर्माण*. डिस्कवरी पब्लिशिंग.
29. देशपांडे, एस. (2007). *समकालीन भारत: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण*. पेंगुइन बुक्स.
30. एनसीईआरटी. *स्थिति पत्र*.
31. भट्टाचार्य, एस. (2001). *शिक्षा और वंचित वर्ग*. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
32. खान, आर. एस. (2016). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*. नीलकमल पब्लिकेशंस.
33. महाजन, एस. (2013). *भारत में सांस्कृतिक पहचान और शैक्षिक नीति*. कल्पज पब्लिकेशंस.
34. कुमार, के. (1992). *क्या पढ़ाना उचित है?*. ओरिएंट लोंगमैन.
35. अवस्थी, डी. (2019). *भारतीय दार्शनिकों के शैक्षिक विचार*. न्यू ऐज पब्लिकेशंस.
36. शर्मा, बी. (2018). *मूल्य शिक्षा: दार्शनिक दृष्टिकोण*. रीगल पब्लिकेशंस.
37. राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (NIEPA). *अनुसंधान रिपोर्ट्स*.
38. हिंदू विवेक केंद्र. (ऑनलाइन स्रोत).
39. *प्रबुद्ध भारत* जर्नल. रामकृष्ण मिशन पब्लिकेशंस.
40. *रिसर्चगेट* और *अकाडेमिया.एडु* – भारतीय शैक्षिक दर्शन पर शोधपत्र.